दाशरथी शतकम्

(भक्ति प्रधान शतक)

- प्रस्तुति
- प्रो . भीमसेन निर्मल

श्री दाशरथी शतकम

(भक्ति प्रधान शतक)

तेलुगु मूल :

कंचर्ल गोपन्न (भक्त रामदास)

लिप्यंतरण एवं अनुवाद:

प्रो. भीमसेन निर्मल

प्रकाशक :

महती प्रकाशन,

गान्धीनगर, हैदराबाद

श्री दाशरथी शतकम
(भक्ति प्रधान शतक)

प्रथम संस्करण : 2001

प्रतियाँ : 500

मूल्य : रु. 60 /-

Pages 64

प्रकाशक

महती प्रकाशन,

407,गान्धीनगर, हैदराबाद - 500 080.

मुद्रण :
दीप्ती टेक्नीकलर प्रिंटर्स,
सी.15, बालाजी टवर्स,
गांधीनगर, हैदराबाद.
Ph: 7671356, Cell : 98490 25971.

Sri Dasarathi Satakam,
Transliteration and Translation : Prof. Bhimsen Nirmal,
Pub : Mahati Prakashan, 407, Gandhi Nagar, Hyderabad - 500 080.
First Edition : 2001, Price :Rs. 60/-

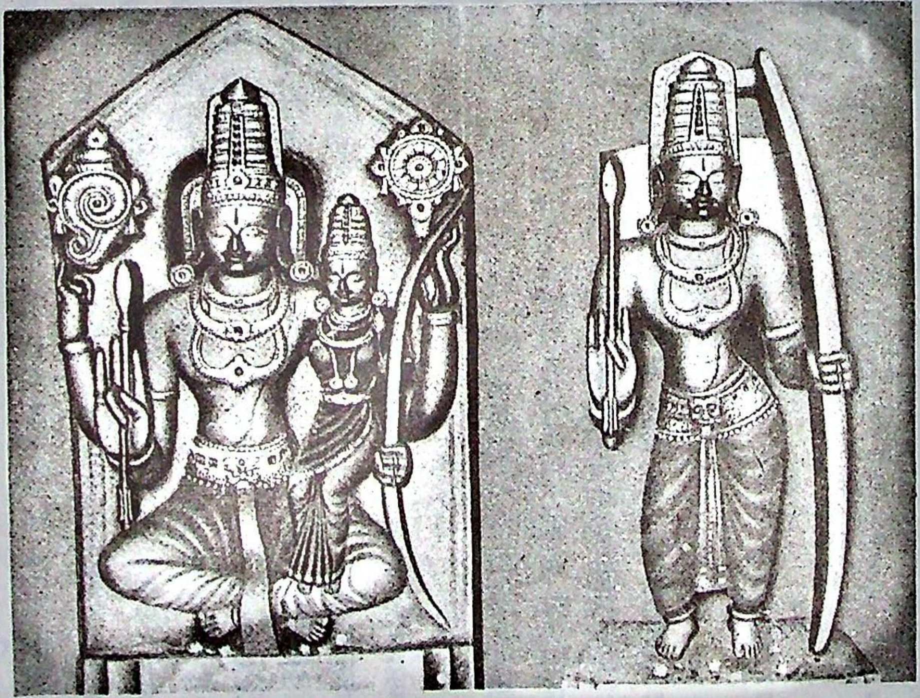

भद्राद्रि में स्थित श्री सीतारामलक्ष्मण की दिव्यमूर्तियाँ

शतक साहित्य

शतक तेलुगु साहित्य की विशिष्ट और अत्यधिक संपन्न प्रक्रिया है। अन्य विधाओं के समान प्राकृत और संस्कृत के शतकों के अनुसरण पर विकसित होने पर भी यह काव्य-सौष्ठव तथा संख्या की दृष्टि से अन्य भाषाओं की अपेक्षा महत्व को प्राप्त कर चुका है। विद्वानों का अनुमान है कि भक्ति, नीति, श्रुंगार, तात्विकता, हास्य, अधिक्षेप, ऐतिहासिकता, प्रहेलिका आदि आदि विषयों के आधार पर लिखे गए शतकों की संख्या दस हजार से अधिक है। विशेषता यह है कि आधुनिक युग में भी शतक लिखे जा रहे हैं।

कवि की आत्माभिव्यक्ति-प्रधान होने के कारण यह शतक-प्रक्रिया पाठक को अभिभूत करने में अत्यंत समर्थ सिद्ध हुई है।

संस्कृत काव्यशास्त्र में अनिबद्ध, असर्गबद्ध, उपकाव्य की कोटि में शतक की गिनती होती है। तेरहवीं शताब्दी के अमृतानंद योगी ने सर्व प्रथम अपने 'अलंकार-सार-संग्रह' नामक ग्रंथ में संख्या नियम पर आधारित मुक्तक, द्रिक, त्रिक, पंचक, अष्टक, नवक, तारावली आदि का उल्लेख करते हुए 'शतेन शतकं प्रोक्तम्' कहकर, शतक की स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत की।

तेलुगु में पंद्रहवीं शती के विन्नकोट पेद्दन्न ने शतक प्रक्रिया की व्याख्या की है। लक्षण-ग्रंथकर्ता अप्पकवि (सत्रहवीं शताब्दी) के समय तक पर्याप्त संख्या में शतक लिखे गए थे। किन्तु क्षुद्रकाव्य में परिगणित कर, अप्पकवि ने शतक की विस्तार से चर्चा नहीं की है। आधुनिक काल में शतक की विस्तार से व्याख्या की गई है। विषयवस्तु की एकरूपता से युक्त मुक्तक-समुच्चय को शतक कहा गया है। (डा. के. गोपालकृष्णराव) तेलुगु में शतक के तीन प्रधान लक्षण माने गए हैं। 1. संख्या नियम, (2) मकुट नियम तथा, (3) वृत्त नियम। संख्या में एक सौ न होकर, 103 अथवा 108, अथवा 116, पद्य लिखने की परंपरा है। प्रत्येक पद्य के अंत में एक ही प्रकार का संबोधनात्मक शब्द होता है। एक-रूपता, एक-सूत्रता तथा मकुट नियम का पालन करने के लिए एक ही प्रकार के छंद का प्रयोग किया जाता है।

तेलुगु में आदिकवि नन्नय, उनके समकालीन नन्निचोड के समय में शतक प्रक्रिया का प्रारंभ हुआ था। बारहवीं और तेरहवीं शती में शैव कवियों ने अधिक संख्या में भक्ति-शतकों की रचना की थी।

मध्य युग में भक्ति के साथ-साथ अधिक्षेप (व्यंग्य) और हास्य प्रधान शतकों की रचना हुई है। शतकों में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों के वर्णन को भी स्थान मिलता गया।

आत्माभिव्यक्ति प्रधान काव्य शैली में होने के कारण शतकों में भिन्न भिन्न प्रकार के विषयों को ग्रहण कर, विशिष्ट शतकों की रचना पर्याप्त मात्रा में हुई है और हो रही है। शतकों में अपेक्षाकृत भक्तिभाव की प्रधानता है।

'दाशरथी शतकम्' तेलुगु का सर्वप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय शतक है। वैसे भगवान राम आन्ध्र जनता के अत्यंत प्रिय आराध्य हैं। भद्राचलं के पास गोदावरी नदी के किनारे 'पंचवटी' नामक स्थान भक्तों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

भक्त रामदास के नाम से प्रख्यात कंचर्ल गोपन्न ने इस शतक में उत्पलमाला छंद में और चंपकमाला छंद में, 'दाशरथी! करुणापयोनिधी !' के मकुट से युक्त 103 पद्य लिखे हैं। ये पद्य भक्तिभाव से परिपूर्ण, आत्मनिवेदन से युक्त तथा कवि के रचना-सौष्ठव का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। संस्कृत भाषा पर सुष्ठु अधिकार रखने वाले कविवर गोपन्न ने समुचित रूप से अनुप्रास, यमक आदि शब्दालंकारों का, रूपक, अपन्हुति आदि अर्थालंकारों का औचित्यपूर्ण से प्रयोग किया है।

निर्बाध प्रवाह से युक्त इस शतक के पद्य पाठकों को प्रभावित करने में समर्थ हैं।

कंचर्ल गोपन्न बनाम भक्त रामदास

कुली कुतुबशाह (जो तानीशा /तानाशाह के नाम से प्रसिद्ध हैं) के महामंत्री थे अक्कन्न और मादन्न। उनके भानजे गोपन्न स्मार्त (*ए. शिव और केशव में भेद न मानने वाले)* थे। उनका स्वग्राम वर्तमान खम्मं जिले (तेलंगाने) का नॅलकोंड पल्ॅ था। वे रामांबा और लिंगन्न के सुपुत्र थे। सन् 1620 में गोपन्न का जन्म हुआ था। कहा जाता है कि वे सन् 1680 तक जीवित थे।.अपने मामाओं की सिफारिश के कारण गोपन्न को 1660 के आसपास भद्राचलम् का तहसीलदार नियुक्त किया गया। स्मार्त होते हुए श्रीमान् रघुनाथ भट्टराचार्य से दीक्षा ग्रहण कर वे वैष्णव बन गए। कहा जाता है कि किसी 'कबीर' ने उन्हें रामनाम का उपदश दिया था।

भद्राचलम् में एक छोटे पहाड़ पर स्थित रामालय की तम्मल दम्मक्क नामक भक्तिन ने थोडी-बहुत मरम्मत कराई थी। इससे परिचित होकर, गोपन्न ने कर के रूप

में वसूल की गई रकम -6 लाख रुपये - को मंदिर के पुनर्निमाण और देवता मूर्तियों के अलंकरण, आभूषण आदि बनाने में खर्च कर दी। (भगवान के उत्सव मनाते समय सदाव्रत की तैयारी के समय कांजी के कूप में गोपन्न का लडका गिर गया और मर गया। तब गोपन्न ने भगवान की स्तुति की तो बालक जीवित हो गया। तब से वे 'रामदास' के नाम से प्रख्यात हुए।) बादशाह के पास यह गबन का समाचार पहुँचाया गया तो गोपन्न को कारागार की सजा दी गई (आज के गोलकोंडा किले में 'रामदास का बंदीखाना' दर्शनीय स्थान है।) बारह वर्ष तक नरक यातनाएँ सहते हुए रामदास ने सैकडों पदों की रचना की। अन्त में साक्षात् राम और लक्ष्मण ने तानीशा को 6 लाख रुपये ला दिए और रामदास को मुक्त कराया। तानीशा भी, महाभक्त को यातनाएँ देने के अपने अपराध के लिए पश्चात्ताप करते हुए, रामदास को स्वयं ठाठ बाट से भद्राचलम् ले जाकर, उतनी ही रकम भद्राचलम् के भगवान श्रीराम को समर्पित की। उन्होंने यह वचन दिया कि प्रतिवर्ष श्रीराम नवमी के दिन भगवान के विवाह महोत्सव के अवसर पर गोलकोंडा सरकार की ओर से मोती और रेशमी कपडे भेंट स्वरूप भेजे जाएँगे। तब से लेकर आज तक इस प्रथा का निर्विघ्न रूप से पालन किया जा रहा है।

परंपरा से संस्कृत और तेलुगु भाषा के पंडित, गोलकोंडा राज्य के अधीन अधिकारी होने के कारण फारसी और उर्दू भाषाओं में निष्णात भक्त रामदास के नाम से प्रख्यात कंचेर्ल गोपन्न कर्नाटक संगीत के भी प्रवीण वागेयकार थे। उनके लिखे सैकडों पदों में आज डेढ सौ के लगभग पद उपलब्ध हैं। इनमें 'अंतरामामयं ई जगमंता राममयं' (सबकुछ राममय है, यह सारा जग राममय है), 'नरहरि नम्मक परुलनु नम्मिते, नरजन्ममीडेरुना ओ मनसा' (नरहरि श्री विष्णु भगवान पर विश्वास न रख, रे मन, अन्यों पर विश्वास रखने से कहीं जन्म सफल हो सकता है क्या?), 'ननु ब्रोवमनि चेप्पावे सीतम्म तल्लि (हे सीतामाई ! मेरी रक्षा करने के लिए कहा दो न (भगवान से)) आदि पद अत्यंत लोकप्रिय हैं।

कंचर्ल गोपन्न कृत 'दाशरथी शतकम्' तेलुगु के शतक साहित्य में अत्यंत प्रसिद्ध है। भद्राचलम् में स्थित श्रीरामचंद्र का संबोधन 'दाशरथी ! करुणा पयोनिधी' के मकुट से करते हुए कुल 103 पद्यों की रचना कर भगवान श्रीराम को समर्पित किए हैं।

भक्ति रसपूर्ण मालाएँ

भक्त प्रवर गोपन्न ने समग्र शतक के 103 पद्यों को चंपकमाला अथवा उत्पलमाला छन्दों में पिरोने का सफल प्रयास किया है। यों कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि

उन्होंने अपने आराध्य भगवान श्रीराम को चंपक पुष्पों और उत्पल कुसुमों से बनी प्रसून-मालाओं से समलंकृत किया है।

उत्पल माला और चंपक माला वर्णवृत्त हैं।

उत्पलमाला: चारों चरणों में 'भ र न भ भ र व' सात -सात गण होते हैं। ग्यारहवें अक्षर पर यति होती है। 'व' में दो लघु होते हैं।

चंपक माला: चारों चरणों में 'न ज भ ज ज ज र' सात-सात गण होते हैं। दसवें अक्षर पर यति होती है। 'र' में लघु गुरु होते हैं।

नोट : संस्कृत और हिन्दी के समान 'यति' का अर्थ विराम न होकर, तेलुगु में 'यति' का अर्थ 'अक्षर मैत्री' है अर्थात् यति स्थान पर मित्राक्षर होना चाहिए।

प्रत्येक चरण के द्वितीय व्यंजन का एक समान होना 'प्रास' कहलाता है।

कहीं-कहीं चार चरणों की जगह पाँच चरणों की रचना की है।

भक्तप्रवर गोपन्न बनाम रामदास ने नियमबद्ध रूप से उत्पलमालाओं एवं चंपकमालाओं की रचना की है।

तेलुगु लिपि

तेलुगु मूलतः द्रविड भाषा-परिवार से संबद्ध भाषा हैं, किन्तु यह संस्कृत भाषा से इतनी प्रभावित है कि कुछ विद्वान् इसे संस्कृत-जन्य ही मानते हैं। उत्तर और दक्षिण के संधि-स्थल पर स्थित होने के कारण यह स्वाभाविक ही है कि तेलुगु या आन्ध्र भाषा संस्कृत भाषा एवं साहित्य से अत्यधिक प्रभावित हो जाए।

अन्य भारतीय भाषाओं के समान ही तेलुगु में नागरी वर्णमाला के क्रम को अपनाया गया है। किन्तु संस्कृत वर्णमाला की अपेक्षा तेलुगु में ॠ (दीर्घ), ह्रस्व ए और ह्रस्व ओ, च और ज के दन्त्य उच्चारण, घर्षण ध्वनि वाला 'र' और 'ळ' अधिक हैं।

तेलुगु को 'अजंत' भाषा कहते हैं। अर्थात् प्रत्येक शब्द के अंत में कोई न कोई स्वर (अधिकतर 'उ' या 'इ') होता है और उस स्वर का उच्चारण होता है। शब्द के मध्य में आने वाले स्वर का भी पूरा - पूरा उच्चारण होता है। यदि दो स्वर आ जाएँ तो पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। अतः नागरी लिपि में दिए गए तेलुगु शब्दों का सस्वर उच्चारण होना चाहिए।

संस्कृत के कई लकारान्त शब्दों के 'ल' के स्थान पर तेलुगु में 'ळ' का प्रयोग होता है। यथा कला 'कळा', मंगल 'मंगळ', मुरली 'मुरळी' आदि।

तेलुगु में तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' के उच्चारण में स्पष्ट अंतर है।

तेलुगु के कुछ शब्दों में अर्धानुस्वार का प्रयोग होता है जो उस स्थान पर प्राचीन तेलुगु में प्रयुक्त अनुस्वार का बचा रूप है। इसका उच्चारण नहीं होता है और आधुनिक काल में उसका प्रयोग लिपि चिह्न का नहीं हो रहा है। - अतः लिप्यंतरण में अर्धानुस्वर के लिपि संकेत को छोड दिया गया है।

तेलुगु में वर्गान्त आनुनासिक के स्थान पर सर्वथा अनुस्वार का ही प्रयोग होता है।

साधारण तथा तेलुगु के शब्द दीर्घान्त नहीं होते, न हलन्त है। संस्कृत के दीर्घान्त शब्द तेलुगु में ह्रस्वान्त रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। शब्द के अंतिम स्वर का उच्चारणहोताहै, अतः हलन्त रूप में उनका उच्चारण नहीं होना चाहिए।

वाक्य के मध्य में स्वर का कदापि प्रयोग नहीं होता। परस्वर अपने से पूर्व के व्यंजन से जुड जाता है।

बहुधा क, च, ट, त, प (इन्हें सरल अक्षर कहते हैं) पूर्व में अर्धानुस्वार या अनुस्वार होने पर ग, ज, ड, द, ब (इन्हें परुष अक्षर कहते हैं) में बदल जाते हैं। इस नियम पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। वरन् शब्द के रूप को समझने में कठिनाई होगी।

संस्कृत के शतप्रतिशत शब्दों का तेलुगु में प्रयोग होता है। किन्तु कतिपय संस्कृत शब्दों के अर्थ हिन्दी और तेलुगु में भिन्न होते हैं।

तेलुगुं 'समास-बहुला' भाषा है। विशेषरूप से काव्य में बहुधा लंबे-लंबे समासों का प्रयोग होता है। अन्वय में समासों का विग्रह करने से अर्थ सरलता से समझ में आ जाएगा।

किसी एक भाषा को अन्य लिपि में लिप्यंतरित करते समय उसके पढने में कुछ कठिनाई अवश्य होती है। अतः नम्र निवेदन है कि इस लिप्यन्तरण को पढते समय उपरोक्त तथ्यों का ध्यान रखें।

नोट : ह्रस्व 'ए' और ह्रस्व 'ओ' को व्यंजन और मात्रा के नीचे रेखा देकर स्पष्ट किया गया है। अर्थात् अक्षर के नीचे रेखा ह्रस्व उच्चारण को सूचित करता है।

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥

दाशरथी शतकम्

उ. श्री रघुराम, चारु तुलसी-दळदाम, शमक्षमादि श्रृं-
गार गुणाभिराम, त्रिजगन्नुत शौर्य रमा ललाम, दु-
र्वार-कबंध-राक्षस-विराम, जगज्जन-कल्मषार्णवो-
त्तारकनाम, भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 1

हे श्री रघुराम ! हे चारु (सुन्दर) तुलसीदल दाम (हार) को धारण करने वाले ! हे राम! शम, क्षमा आदि श्रृंगार (शोभाप्रद) गुणों से अभिराम (सुन्दर) ! हे त्रिजगन्नुत शौर्य-रमा (शौर्य रूपी लक्ष्मी) से ललाम (सुन्दर) बने हुए राम ! हे दुर्वार कबन्ध नामक राक्षस का संहार करने वाले ! हे जगज्जनों को कल्मष (पाप) रूपी समुद्र का तारण कराने वाले नाम वाले ! हे भद्रगिरि में स्थित दाशरथी ! हे करुणा के पयोनिधी (सागर) !

उ. राम ! विशाल विक्रम् पराजित भार्गवराम ! सद्गुण-
स्तोम ! परांगनाविमुख सुव्रतकाम! विनील नीरद-
श्याम ! ककुत्स्थ-वंश-कलशांबुधि सोम ! सुरारि दोर्बलो-
द्दाम-विराम ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 2

भार्गवराम (परशुराम) को पराजित करने वाले विशाल विक्रम वाले! हे सद्गुणों के स्तोम (राशी) ! हे परांगनाओं के प्रति विमुख बने रहने के सुव्रत की कामना (इच्छा) करने वाले ! हे विनील नीरद श्यामा ! हे ककुत्स्थ वंश रूपी कलशांबुधि (क्षीरसागर) के सोम (चंद्र)! हे सुरारि (राक्षसों) के दोर्बल (भुजवल) का उद्दाम रूप से विनाश करनेवाले ! हे भद्रगिरि में स्थित दाशरथी ! हे करुणा के पयोनिधी !

च. अगिणित सत्यभाष ! शरणागतपोष ! दयालसज्झरी-
विगत समस्त दोष ! पृथिवीसुरतोष ! त्रिलोकपूत कृ-
द्गगन धुनी मरंद पदकंज विशेष मणिप्रभा धग-
द्धगित विभूष ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 3

हे अगणित सत्यवचन वाले ! हे शरणागत-पोषक ! हे दया से प्रकाशमान (दयारूपी) प्रवाह से समस्त दोषों को हरने वाले ! हे पृथ्वीसुरों (ब्राह्मणों) को संतुष्ट करने वाले ! हे त्रिलोकों को पवित्र करने वाली आकाशगंगा के प्रवाहरूपी मकरंद से अतिशय (शोभायमान) बने चरण-कमल वाले ! हे मणियों की प्रभाओं से जगमगानेवाले आभरणों को धारण करने वाले ! हे भद्रगिरि में स्थित दाशरथी ! हे करुणा के पयोनिधी !

उ. रंगदरातिभंग ! खगराजतुरंग ! विपत्परंपरो-
त्तुंग तमः पतंग ! परितोषितरंग ! दयांतरंग ! स-
त्संग धरात्मजा-हृदय सारसभृंग निशाचराब्ज मा-
तंग ! शुभांग ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 4

आयुध धारण कर शोभायमान बन शत्रुओं का विनाश करने वाले ! खगराज को वाहन बनाने वाले! विपत् - परंपराओं के घोर अंधकार केलिए सूर्यसम ! श्री रंगनाथ को संतुष्ट कर चुकने वाले ! दया से पूर्ण अंतरंग वाले! सज्जनों के साथ संगति करने वाले ! धरात्मजा (सीता) के हृदय रूपी सारस (कमल) के लिए भ्रमर ! निशाचर-रूपी कमल-नालों के लिए गजराज ! दिव्यमंगल विग्रह वाले ! हे भद्रगिरि .... पयोनिधी !

उ. श्रीद ! सनंदनादि मुनिसेवितपाद ! दिगंत कीर्ति सं-
पाद ! समस्तभूत परिपाल विनोद ! विषाद वल्लिका-
च्छेद ! धराधिनाथकुलसिंधुसुधामयपाद ! नृत्तगी-
तादि विनोद ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 5

संपदाओं को प्रदान करने वाले ! सनंदन आदि-आदि मुनियों से पूजित चरण वाले ! दिगंतों तक अपनी कीर्ति का विस्तार करनेवाले ! समस्त प्राणियों की रक्षा-करने में उत्सुकता रखने वाले ! विषादरूपी वल्लिकाओं (लताओं) को काट देनेवाले ! धराधिनाथ (क्षत्रियों) के वंशरूपी सिंधु के लिए चंद्र सम ! नृत्य-गीतादियों से प्रसन्न बने रहने वाले ! हे भद्रगिरि .... निधी !

उ. आर्युल केल्लु म्रोक्कि विनतांगुडनै रघुनाथभट्ट रा-
चार्युल कंजलेत्ति कविसत्तमुलन् विनुतिंचि कार्य सौ-
कर्यमेलर्प नोक्क शतकं बोनगूर्चि रचिंतु नेडु ता-
त्पर्यमुनन् ग्रहिंपुमिदि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 6

समस्त आर्यजनों को प्रणाम कर, विनम्र शरीरवाला बनकर, रघुनाथ भट्टराचार्य नामक गुरु के समक्ष अंजलि भर कर, श्रेष्ठ कवियों की प्रशंसा कर, मेरे कार्य को सुविधाजनक बनाने की प्रार्थना कर आज एक शतक की रचना कर रहा हूँ। इसे आदर सहित स्वीकार करो। हे भद्र .... निधी !

च. मसकोनि रेगुबंड्लकुनु मौक्तिकमुल् वेलपोसिनट्लु दु-
र्व्यसनमु जेंदि काव्यमु दुरात्मुल किच्चिति मोसमय्ये ना
रसनकु बूतवृत्ति सुकरंबुग जेकुरुनट्लु वाक्सुधा -
रसमुलु चिल्क बद्यमुखरंगमुनंदु नटिंपवय्य सं-
तसमुजेंदि भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 7

इससे पहले बेर के फलों को मोती के बदले खरीदने के समान, धन के प्रलोभन से सुन्दर काव्यों की रचना कर उन्हें दुष्टजनों को देकर प्रवंचित हो गया ! इससे मेरी रसना (जिह्वा) अपवित्र हो गयी है। ऐसी मेरी जिह्वा स्वतः पवित्र हो जाय ! ऐसे पद्यों से युक्त (तुम्हारे नाम से युक्त पवित्र पद्यों से) मेरे मुख में शोभायमान बनकर रहो । हे भद्र .... निधी !

उ. श्रीरमणीयहार ! यतसीकुसुमाभ शरीर ! भक्त मं-
दार ! विकारदूर ! परतत्व विहार ! त्रिलोक चेतनो-
द्धार ! दुरंतपातक वितान विदूर ! खरादिदैत्य कां-
तार कुठार ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 8

श्री रमणीय हार से युक्त ! यतसी कुसुम के समान शरीर वाले ! भक्तों के लिए कल्पवृक्ष ! विकारों से दूर परतत्व में विहार करने वाले ! त्रिलोकों के जीवों की रक्षा करने वाले ! दुरन्त पातक समूह को दूर करने वाले ! खर आदि राक्षस रूपी कांतार (कानन) के लिए कुठार (कुल्हाडी) बने हे राम ! हे भद्र .... निधी !

च. दुरितलतालवित्र ! खरदूषण कानन-वीतिहोत्र ! भू
भरण कळाविचित्र ! भवबंध विमोचनसूत्र ! चारु वि-
स्फुरदरविंदनेत्र ! घनपुण्यचरित्र ! विनीलभूरि कं-
धर समगात्र ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 9

दुरित (पाप) रूपी लताओं के लिए लवित्र (हँसिया) सम ! खर-दूषण आदि राक्षस रूपी कानन के लिए वीतिहोत्र (अग्निहोत्र) सम ! भूमि को धारण करने की कला में निपुणता रखने वाले ! भवबन्धनों से मुक्त करने के उपाय वाले ! सुन्दरता से विस्फुरित कमलनेत्र वाले! घन (महान) पुण्य- चरित्र वाले ! विनील भूरि कंधरों (मेघों)के सम शरीर वाले ! हे भद्र .... निधी !

च. कनकविशाल चेल ! भवकानन शात कुठारधार ! स-
ज्जन परिपालशील ! दिविजस्तुत सद्गुण कांड, कांड सं-
जनित पराक्रम क्रम विशारद ! शारदकंद कुंद चं-
दन घनसार सार यश ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 10

सुनहरे विशाल गोट से युक्त वस्त्र धारण करने वाले ! भवरूपी कानन के लिए पैनी धार से युक्त कुठार सम ! सज्जनों की रक्षा करने के स्वभाव वाले ! दिविजों (देवताओं) से प्रशंसित सद्गुणों की राशी ! बाणों को चलाने के पराक्रम में नैपुण्य से युक्त ! शरत्काल के मेघ, कुंदपुष्प, चंदन और कर्पूर के सार सम यश वाले ! हे भद्र .... निधी !

उ. श्री रघुवंश तोयधिकि शीतमयूखुडवैन नी पवि-
त्रोरु पदाब्जमुल्विकसितोत्पल चंपक वृत्तमाधुरी
पूरित वाक्प्रसूनमुल बूजलोनर्चेद जित्तगिंपुमी
तारकनाम ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 11

हे तारकनाम वाले ! श्री रघुवंश रूपी तोयधि (सागर) के लिए तुम चंद्र हो। ऐसे तुम्हारे उरु (महान) पवित्र चरण-कमलों को विकसित उत्पल और चंपक रूपी वृत्तों द्वारा, माधुर्य से पूर्ण वाक्प्रसूनों से पूजा करूँगा। इसे स्वीकार करो ! हे भद्र .... निधी !

उ. गुरुतरमैन काव्यरस गुंभन कब्बुरमंदि मुष्करुल्
सरसुल माड्कि संतसिल जालुदुरोटु शशांक-चंद्रिकां-
कुरमुल किंदुकांतमणिकोटि स्रविंचिन भंग विंध्य भू-
धरमुन जारुने शिललु ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 12

गुरुतर काव्य-रस-निर्माण के कौशल से सरस जनों के समान कहीं मूर्ख प्रसन्न बन सकते हैं ? (नहीं) शशांक (चंद्र) की चाँदनी के स्पर्श से चंद्रकांत शिलाओं के द्रवीभूत होने के समान कहीं विंध्य - भूधर (पर्वत) पर स्थित शिलाएँ पिघलती हैं ? (नहीं) हे भद्र .... निधी !

उ. तरणिकुलेश ! ना नुड्डुल दप्पुलु गल्गिन नीदु नाम स-
द्विरचितमैन काव्यमु पवित्रमुगादे ? वियन्नदीजलं
बरुगुचु वंकयैन मलिनाकृति बारिन दन्महत्वमुं
दरमे गणिंप नेव्वरिकि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 13

हे तरणि-कुलेश (सूर्यवंश के राजा) ! मेरे वचनों में कहीं कुछ दोष हों, तब भी तुम्हारे नाम पर विरचित काव्य होने के कारण वे पवित्र ही बने रहेंगे। गंगा का प्रवाह टेढा-मेढा होकर, मलिन आकृति से प्रवाहित होने पर भी उसके महत्व की गिनती करना किसी के लिए संभव है ? (किसी के लिए नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ. अजुनकु दंड्रिवय्यु सनकादुलकुं बरतत्वमय्यु स-
द् दिविजमुनि कोटिकेल्ल गुलदेवतवय्यु दिनेश वंशभू -
भुजुलकु मेटिवय्यु बरिपूर्णुडवै वेलुगोंदु पक्षिरा-
ड्ध्वज ! निनु ब्रस्तुतिंचेसेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी !
14

ब्रह्मा के पिता बने हुए, सनक आदि मुनियों के लिए परतत्व बने हुए, सद्विज-मुनि-समूह के लिए आराध्य देव बने हुए, दिनेश-वंश के राजाओं में श्रेष्ठ बने हुए, सर्व व्यापक बने हुए, हे पक्षिराज से युक्त ध्वजवाले ! मैं तुम्हारी प्रस्तुति करता हूँ। हे भद्र .... निधी !

च. हरुनकु नव्विभीषणुन कद्रिजकुं दिरुमंत्रराजमै
करिकि नहल्यकुन् द्रुपदकन्यकु नार्ति हरिंचु चुट्टमै
परगिन यट्टि नी पतितपावन नाममु जिह्वपै निरं-
तरमु नटिंप जेयुमिक दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 19

शिवजी के लिए, विभीषण के लिए, पार्वती देवी के लिए, श्रीकर-मंत्र बनकर, गजराज की, अहल्या की और द्रौपदी की आर्ति का हरण करने वाला बन्धु (रिश्तेदार) बनकर, विलसित तुम्हारा नाम, पापात्माओं को पुनीत बनाने वाला तुम्हारा नाम आगे सदा मेरी जिह्वा पर नृत्य करता रहे। हे भद्र .... निधी !

उ. श्रीरम सीत गाग निजसेवकबृंदमु वीर वैष्णवा -
चारजनंबु गाग विरजानदि गौतमिगा विकुंठमु -
न्नारय भद्रशैल शिखराग्रमु गाग वसिंचि चेतनो -
द्धारकुडैन विष्णुडवु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 20

श्री रमा के सीताजी बनने पर, तुम्हारे समस्त सेवक समूह का वैष्णव जन बनने पर, विरजा नदी के गोदावरी बनने पर, भद्रशैल के शिखराग्र के वैकुंठ बनने पर, तुम समस्त प्राणियों के रक्षक महाविष्णु होकर भद्रगिरि पर निवास कर रहे हो। (अर्थात् - भद्रगिरि पर स्थित रामचंद्र साक्षात् महाविष्णु ही हैं)। हे भद्र .... निधी !

उ. कंटि नदीतटंबु बोडगंटिनि भद्रनगाधिवासमुं
गंटि निलातनूज नुरुकार्मुक मार्गण शंख चक्रमुल्
गंटिनि मिम्मु लक्ष्मणुनि गंटि गृतार्थुडनैति नो जग
त्कटंक दैत्यनिर्दलन ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 21

लोक विरोधी राक्षसों का संहार करने वाले हे राम ! मैं ने गोदावरी के तीर प्रांत को देखा है। भद्र नगाधिवास को देखा है। इला-तनूजा (सीताजी) को देखा है। महान बाण, धनु, शंख, चक्र को देखा है। आप को देखा है और लक्ष्मण को देखा है। इस प्रकार मैं कृतार्थ बन गया हूँ। हे भद्र .... निधी !

च. हलिकुनकुन् हलाग्रमुन नर्थमु सेकुरु भंगि दप्पिचे
नलमट जेंदुवानिकि सुरापगलो जलमब्बिनट्लु दु-
र्मलिन मनोविकारिनगु मर्त्युनि नन्नोडगूर्चि नी पयिं
दलपु घटिंपजेसितिवि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 22

किसान को हल की नोक पर निधि के प्राप्त होने के समान, प्यास से पीडित व्यक्ति को गंगाजी के जल के प्राप्त होने के समान, दुर्मलिन मनोविकार से युक्त मुझ मर्त्य को तुम पर आसक्ति उत्पन्न कर, तुम पर भक्ति की भावना को उत्पन्न किया है। हे भद्र .... निधी !

उ. कोंजक तर्कवादमनु गुद्दलिचे बरतत्व भूस्थलिन्
रंजिल द्रव्वि कन्गोननि रामनिधानमु नेडु भक्ति सि-
द्धांजनमंदु हस्तगतमय्ये भली यनगा मदीय हृ-
त्कंजमुनन् वसिंपुमिक दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 23

बिना किसी संशय के तर्कवाद रूपी कुदाल से परतत्व रूपी भूस्थल को, प्रसन्नता से खोदकर भी प्राप्त न कर सकने वाले राम रूपी निधान को आज मैं ने भक्ति रूपी सिद्धांजन से हस्तगत किया है। वाह ! हे राम ! अब तुम मेरे मन में निवास करो। हे भद्र .... निधी !

उ. रामुडु, घोरपातकविरामुडु, सद्गुणकल्पवल्लिका-
रामुडु, षड्विकार जयरामुडु, साधु-जनावन व्रतो-
द्दामुडु, रामुडे परमदैवमु माकनि मी यडुं-
गु गेंदामरले भजिंचेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 24

राम घोरपातक-विराम (विनाशक)है। सद्गुण-कल्पवल्लिकाओं का उपवन है। (विनाशक) षड्विकारों को जीतनेवाला है। साधुजनों की रक्षा करने के उद्दाम व्रत वाला है। ऐसा राम ही हमारा परम दैव है। ऐसा मानकर मैं आप के चरण -कमलों की सेवा करता रहूँगा। हे भद्र .... निधी !

उ. चक्केर मानि वेमु दिनजालिन कैवडि मानवाधमुल्
पेक्कुरु बक्क दैवमुल वेमरु गोल्चेदरट्लु कादया
म्रोक्किन नीक म्रोक्कवले मोक्षमोसंगिन नीव यीव-
लें दक्किनमाटलेमिटिकि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 25

शक्कर को छोडकर कडुवे नीम को खाने का साहस करने के समान, अनेक नीच मानव असमर्थ देवी - देवताओं की बार-बार सेवा करते रहते हैं । ऐसा नहीं करना चाहिए। अगर प्रणाम करना है तो तुम्हारे ही चरणों को प्रणाम करना है । यदि मोक्ष प्रदान करना है तो तुम्हीं को वह काम करना चाहिए । अन्य सब बातें व्यर्थ हैं। हे भद्र .... निधी !

उ. 'रा' कलुषंबुलेल्ल बयलं बड़द्रोचिन, 'मा' कवाटमै
दीकोनि ब्रोचु निक्कमनि धीयुतुलेन्न ददीयवर्णमुल्
गैकोनि भक्तिचे नुडुव गानरु गाक विपत्परंपरल्
दाकोनुने जगज्जनुल दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 26

तुम्हारे नाम का 'रा' नामक अक्षर समस्त पापों को बाहर ढकेल देता है तो 'मा' नामक अक्षर किवाड बनकर रक्षा करता है। यह सत्य है, ऐसा धीमान लोग कहते हैं और प्रशंसा करते हैं। फिर भी मानव उन दो अक्षरों को स्वीकार कर भक्ति भाव से स्मरण नहीं करते । अगर करें तो कहीं विपत् - परंपराएँ मानवों के पास आ सकेंगी ? (नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ. 'राम हरे ककुत्स्थकुल राम हरे, रघुराम राम श्री
राम हरे' यटंचु मदि रंजिल भेकगलंबु लील नी
नाममु संस्मरिंचिन ज़नंबु भवंबे̲डबासि तत्परं-
धाम निवासुलौदुरट दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 27

'राम ! राम हरे, काकुत्स्थराम हरे, रघुराम, राम, श्रीराम हरे' ऐसा कहते हुए मन को प्रसन्न बनाते हुए मेंढक के समान बार-बार तुम्हारे नाम का स्मरण करने से लोग भव-बाधाओं से मुक्त होकर, उस परंधाम (वैकुंठ) के निवासी बनेंगे, ऐसा सयाने लोगों का कथन है। हे भद्र .... निधी !

उ. चक्के̲रलप्पकुन् मिगुल जव्वनि कें̲जिगुराकु मोविकिं
जो̲क्कपु जुंटितेनियकु जो̲क्किलुचुं गनलेरु गाक ने-
डक्कट रामनाम मधुरामृतमानुट कंट̲े सौख्यमा
तक्किन माधुरी महिम दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 28

शक्कर के ढेले का, अतिशय सुंदर युवती के पल्लव सम अधर का, स्वच्छ मधु का पान करते हुए अधिक प्रसन्न होते रहते हैं। हाय ! राम नाम रूपी मधुर-अमृत का पान करने के समान अन्य कोई माधुर्य नहीं है। उससे बढकर और कोई सुखप्रद नहीं है। (अर्थात् राम नाम ही मधुरतम है।) हे भद्र .... निधी !

उ. अंडजवाह ! निन्नु हृदयंबुन नम्मिन वारि पापमुल्
कोंडलवंटिवैन वेसगूलि नशिंपकयुन्ने, संतता -
खंडल वैभवोन्नतुलु गल्गक मानुने, मोक्षलक्ष्मि कै-
दंड योसंगकुन्ने तुद दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 29

हे पक्षिवाहन वाले। जो तुम पर हृदय से विश्वास रखते हैं, उनके पर्वतसम पाप भी अतिशीघ्र ढह कर नहीं रहेंगे ? (अवश्य ढह जायेंगे) विश्वास रखने वालों को सतत् इंद्र-भोग प्राप्त हुए बिना नहीं रहेंगे ? (प्राप्त होकर रहेंगे)। अंत में मोक्ष-लक्ष्मी प्राप्त हुए बिना रहेगी ? (मोक्ष अवश्य प्राप्त होगा)। हे भद्र .... निधी !

उ. चिक्कनि पालपै मिसिमि जेंदिन मीगड पंचदारतो
मेक्किन भंगि नी विमल मेचक रूप सुधारसंबु ना-
मक्कुव पळ्ळेरंबुन समाहित दास्यमनेटि दोयिटन्
दक्केनटंचु जुर्रेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 30

गाढे दूध पर चमकनेवाली मलाई को, शक्कर के साथ मिलाकर, पेट भर खाने के समान तुम्हारे विमल, साँवले रंग के रूप-सुधारस को मेरे प्रेम रूपी थाली में रखकर समाहित दास्य रूपी अंजलि में प्राप्त कर दोनों हाथों से पी जाऊँगा। हे भद्र .... निधी !

च. सिरुलिड सीत पीडलेगजिम्मुटकुन् हनुमंतुडार्ति पो-
दरुम सुमित्रसूति दुरितंबुलु मानुप रामनाममुं
गरुण दलिर्प मानवुल गावग बन्निन वज्रपंजरो-
त्करमु गदा भवन्महिम दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 31

संपादाएँ प्रदान करने के लिए सीताजी, पीडाओं को दूर भगाने के लिए हनुमान जी, संकटों से बचाने के लिए तुम्हारा भाई लक्ष्मण और पापों को दूर भगाने के लिए तुम्हारा नाम-इस प्रकार तुम्हारी महिमा, सामर्थ्य और करुणा ये सब मनुष्यों की रक्षा करने के लिए निर्मित वज्र-पंजर समूह है न ? हे भद्र .... निधी !

च. हल कुलिशांकुश ध्वज शरासन शंख रथांग कल्पको-
ज्ज्वल जलजातरेखलनु सांकमुलै कनुपट्टचुन्न मी
कलित पदांबुजद्वयमु गौतमपत्नि कोसंगिनट्लु ना
तलपुन जेर्चि काव गदे दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 32

आप के सुन्दर-चरण-कमल-द्वय हल, वज्र, अंकुश, ध्वज, धनुष, शंख, चक्र, कल्पवृक्ष के उज्ज्वल प्रकाशमान चिह्नों से युक्त हो दिखायी पड रहे हैं। ऐसे चरण-कमलों से आपने गौतम-पत्नी का स्पर्श किया था। उसी प्रकार उन चरणों को मेरे मन में स्थित कर, मेरी रक्षा करो। हे भद्र .... निधी !

च. जलनिधिलोन दूटि कुलशैलमु मीटि धरित्रिगोम्मुनं-
दलवड माटि, रक्कसुनियंगमु गीटि, बलींद्रुनिन् रसा-
तलमुन माटि, पार्थिवकदंबमु गूल्चिनमेटि राम ! ना
तलपुन नाटि रागदवे दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 33

जलनिधि में घुसकर कुलशैल को उखाडकर, धरती को दाढ पर सुंदरता से रखकर, राक्षस के शरीर को फाडकर, महाराज बलि को रसातल में दबाकर, राजसमूह का संहार करने वाले समर्थ (परशुराम) हे राम ! मेरे मन में लग कर रह जाओ न। हे भद्र .... निधी !

उ. भंडनभीमु डार्तजनबांधवुडुज्ज्वल बाणतूण को-
दंडकळा प्रचंड भुज तांडव कीर्तिकि राममूर्तिकिन्
रेंडव साटि दैवमिक लेडनुचुन् गडगट्टि भेरिका-
डांडडडांड डांड निनदंबु लजांडमु निंड मत्त वे-
दंडमु नेक्कि चाटेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 34

युद्धों में भयंकर आर्त जनों का बन्धु बने हुए, उज्ज्वल बाण, तूणीर और धनु से युक्त धनुर्विद्या में और भुज-ताण्डव में कीर्तिमान श्री रामचंद्र के समान प्रचंड देवता अन्य कोई नहीं है। ऐसा कहते हुए झंडा हाथ में लेकर, भेरियों (नगाडों) के डामडमडाम ध्वनियों से ब्रह्मांड को भरते हुए मत्त गजराज पर सवार होकर घोषणा करुँगा। हे भद्र .... निधी !

उ. विन्नपमालकिंचु रघुवीर ! नहि प्रतिलोकमंदु ना-
कन्न दुरात्मुडुं बरमकारुणिकोत्तम ! वेल्पुलंदु नी-
कन्न महात्मुंडु बतित कल्मषदूरुडु लेडु गान वि-
द्वन्नुत ! नीवे नाकु गति दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 39

हे रघुवीर ! मेरी विनय सुनो ! इस लोक में मुझसे बढकर दुष्ट और कोई नहीं है । परम करुणा से उत्तम ! देवताओं में तुम से बढकर दूसरा महात्मा और पतितों के पापों को दूर करने वाला और कोई नहीं है। इसलिए हे विद्वानों से प्रशंसित राम ! तुम ही मेरे लिए गति (आधार) हो । हे भद्र .... निधी!

उ. पेंपनु दल्लिवै कलुषबृंद समागममोंदकुंड र-
क्षिंपनु दंड्रिवै मेयि वसिंचु दशेंद्रियरोगमुल् निवा-
रिंपन् वेज्जवै कृप गुरिंचि परंबु दिरंबु गाग स-
त्संपदलीय नीवे गति दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 40

पालन-पोषण करने के लिए तुम माता हो। पाप-समूह से बचाने के लिए तुम पिता हो । देह में निवास करने वाले दस इंद्रिय रोगों का निवारण करने में वैद्य हो । कृपा से, स्थिर रूप से भौतिक संपादाओं को और मोक्ष को प्रदान करने वाले हो । समस्त विषयों के लिए तुम ही गति (शरण्य) हो । हे भद्र .... निधी !

उ. कुक्षि नजांडपंक्तु लोनगूर्चि चराचर जंतुकोटि सं-
रक्षण सेयु तंड्रिवि, परंपर नी तनयुंडनैन ना
पक्षमु नीवु गावलदे? पापमुलेन्नि योनर्चिनन् जग
द्रक्षक ! कर्त वीवे कद दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 41

तुम कुक्षि (उदर) में ब्रह्मांड-पंक्तियों को सजाकर रख, समस्त चराचर जन्तु-कोटि (प्राणिसमूह) का संरक्षण करने वाले पिता हो। परंपरा से तुम्हारे पुत्र होने के नाते, मेरे कितने ही पाप करने पर भी, तुम्हें मेरा पक्ष लेना चाहिए न ! (मेरा समर्थन-संरक्षण करना चाहिए न !) हे जगद्रक्षक ! तुम्हीं तो कर्ता-धर्ता हो न ! हे भद्र ....निधी !

उ. गद्दरि योगि-हृत्कमल गंध रसानुभवंबु जेंदु पे
न्निद्दपु गंडुदेटि ! धरणीसुत कौगिलि पंजरंबुनन्
मुद्दुलु गुल्कु राचिलुक ! मुक्तिनिधानम ! राम ! रागदे
तद्दयु नेडु नाकडकु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 42

तुम धीर-योगियों के हृदयकमलों के गंध-रस का अनुभव करने वाले पुं-भ्रमर हो। (योगियों के हृदयों में निवास करने वाले हो)। धरणी-सुता (सीताजी) के आलिंगन रूपी पिंजड़े में शोभायमान राज-कीर हो। तुम मुक्ति निधान हो। हे राम ! आज प्रसन्नता से मेरे पास आओ न ! हे भद्र .... निधी !

उ. कलियुग मर्त्यकोटि निनु गन्गोनरानि विधंबो, भक्त व-
त्सलत वहिंपवो, चट्टुल सांद्र विपद्दश वार्धि ग्रुंकुचो
बिलिचिन बल्क विंत मरपे नरुलिद्नरादुगाक, नी
तलपुन लेदे सीत चेर दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 43

कलियुग में संभवतः मर्त्यकोटि (मानव समूह) तुम्हें देख नहीं सकती या संभवतः तुम्हारे मन में भक्तों के प्रति वात्सल्य ही नहीं रह गया। वरन् चट्टुल (घहराते)-सांद्र (गंभीर) विपद्दशारूपी वारिधि (समुद्र) में डूबकर, गुहारने पर भी तुम जवाब क्यों नहीं देते हो ? ऐसी भी विस्मृति कैसी ? हम मानवों को ऐसा कहना नहीं चाहिए लेकिन (कह रहा हूँ)। क्या सीताजी की व्यथा तुम्हारे मन में नहीं है ? (उसे भूल गए क्या?) हे भद्र .... निधी !

च. जनवर ! मी कथावलि विन सैपक कर्णमुलंदु घंटिका-
निनद विनोदमुल् सलुपु नीचुनकुन् वरमिच्चिनावु नि-
न्ननयमु नम्मि कोल्चिन महात्मुलकेमि योसंगेदो सनं-
दननुत ! माकोसंगुमय दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 44

हे जनवर (राजा)! आपके कथा-समूह को सुनने की इच्छा न रखकर, कानों में घंटिकाओं के निनाद से भर लेने वाले नीच (घंटा-कर्ण नामक राक्षस) को वर दिया है। सदा तुम पर विश्वास रखकर, तुम्हारी सेवा करने वाले महात्माओं को जैसा वर प्रदान करोगे, वैसा ही हे सनन्दन-नुत (सनंदन नामक मुनि द्वारा प्रशंसित)! हमें भी प्रदान करो। हे भद्र .... निधी !

उ. पापमुलोंदुवेळ रणपन्नग भूतभय ज्वरादुलं
दापद नोंदुवेळ भरताग्रज ! मिम्मु भजिंचु वारिकि
ब्रापुग नीवु दम्मुडिरुपक्कियलं जनि तद्विपत्ति सं -
तापमु मान्पि कातुरट दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 45

पापों को प्राप्त करते हुए, युद्ध, सर्प, भूतों द्वारा प्राप्त भय और ज्वरादि आपदाओं को प्राप्त करते समय हे भरताग्रज ! तुम्हारी सेवा करने वालों को (उपरोक्त अवसरों पर) तुम और तुम्हारा भाई लक्ष्मण दोनों तरफ से उनकी (उन पीडित जनों की) आपदाओं को दूर कर, उनकी रक्षा करते हैं न। हे भद्र .... निधी !

च. अगणित जन्मकर्म-दुरितांबुधिलो बहुदुःखवीचिकल्
देगिपड नीदलेक जगतीधव ! नी पदभक्ति नावचे
दगिलि तरिंप गोरिति बदंपडि नादुभयंबु मान्पवे
तगदनि चित्तमंदिडक दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 46

अगणित जन्मों के दुष्ट कर्मों से प्राप्त पाप-समुद्र में अनेक प्रकार के दुःख रूपी तरंगों के टूट पडने पर, उस समुद्र को तैर कर पार करने में असमर्थ बना हूँ। जगतीधव (जगत के पति) ! तुम्हारी चरण-भक्ति-रूपी तरणि (नौका) की सहायता से इस समुद्र को पार करना चाहता हूँ। फिर मेरे भय को दूर करो। ऐसा मत समझो कि इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए। (अर्थात् मुझ पर ध्यान दो)। हे भद्र .... निधी !

उ. ने नोनरिंचु पापमुलनेकमुलैननु नादुजिह्वकुं
बानकमय्ये नी परमपावन नाममु दोंटि चिल्क रा
मा ननुगावुमन्न तुदि माटकु सद्गति जेंदे गावुनन्
दानि धरिंप गोरेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 47

मेरे द्वारा किये जाने वाले पापों के अगणित होने पर भी मेरी जिह्वा के लिए आपका परम पावन नाम पानक (शरबत) बन गया है। पूर्व काल में आप का नाम (राम) लेने वाले तोते ने अंतिम समय ''मेरी रक्षा करो'' कहने पर उसे सद्गति (मोक्ष) प्रदान किया। इसलिए मैं भी मोक्ष प्राप्ति की आशा से उस परम पावन नाम का स्मरण करते रहना चाहता हूँ। हे भद्र .... निधी !

च. परधनमुल् हरिंचि परभामल नंटि परान्नमब्बिनन्
मुरिपम कानि मीद नगुमोसमेरुंगदु मानसंबु दु-
स्तरमिदि कालकिंकर गदाहति पाल्पड़नीक मम्मु नी
दरि जेर्चि गाचेदवो दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 48

दूसरों के धन का अपहरण करना, परस्त्रियों का स्पर्श करना, दूसरों के अन्न को प्राप्त करना ये उस समय के लिए आनंद-प्रद हो सकते हैं। लेकिन बाद में उनके कारण दुःख ही प्राप्त होगा। मेरा चित्त इस तथ्य से अवगत नहीं है। यह मोह (प्रलोभन) दुस्तर है। इसलिए हमें यमदूतों की गदाओं के आघातों के भागी न बनने देकर, पता नहीं कैसे हमारी रक्षा करोगे ? (अर्थात् हमें विश्वास है कि तुम किसी भी तरह हमारी रक्षा करोगे)। रक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारा है। हे भद्र .... निधी !

उ. चेसिति घोर कृत्यमुलु चेसिति भागवतापचारमुल्
चेसिति नन्यदैवमुल जेरि भजिंचिन वारि पोंदु ने
जेसिन नेरमुल् दलचि चिक्कुल बेट्टकुमय्य ! अय्य ! नी
दासुडनय्य ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 49

मैं ने कई क्रूर कर्म किये हैं, भगवद्-भक्तों के प्रति अपचार किये हैं, अन्य देवों की सेवा करने वालों का सांगत्य किया है। हे राम ! मेरे किये दोषों पर विचार कर मुझे विपत्तियों में मत फंसाओ । हे मालिक ! मैं तुम्हारा दास हूँ। (दास की रक्षा करना मालिक का कर्तव्य जो है।) हे भद्र .... निधी!

च. परुलधनंबु जूचि, बरभामल जूचि, हरिंपगोरु म-
द्गुरुतर मानसंबनेडु दोंगनु बट्टि निरूढ दास्य वि-
स्फुरित विवेक पाशमुल जुट्टि भवत्चरणंबने मरु-
त्तरुवुन गट्टिवेयगदे दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 50

दूसरों के धन को देखकर, दूसरों की स्त्रियों को देखकर, उनका अपहरण करना चाहने वाले मेरे पापी मन रूपी चोर को पकडकर, दृढ दास्य भाव से प्रकाशमान विवेक रूपी रस्सियों से कसकर अपने चरण रूपी कल्पवृक्ष से बांध डालो न। हे भद्र .... निधी !

च. सललित राम नाम जप सार मेरुंगनु काशिकापुरी
निलयुडगानु मी चरण नीरजरेणु महाप्रभावमुं
देलिय नहल्यगानु जगतीवर ! नीदगु सत्यवाक्यमुं
दलपग रावणासुरुनि तम्मुड गानु भवद्विलासमुन्
दलचि नुतिंप नातरमे ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 51

मनोज्ञ राम-नाम जप के सार को जानने के लिए क्या मैं काशी नगर में निवास करने वाला शंकर हूँ ? (नहीं) तुम्हारे चरण कमलों की रेणुओं के प्रभाव को जानने के लिए क्या मैं अहल्या हूँ ? (नहीं)। हे जगतीवर (राजाराम)! तुम्हारे वचनों की सत्य-धर्मिता को जानने के लिए क्या मैं रावण का भाई विभीषण हूँ ? (नहीं)। तुम्हारी विचित्र लीलाओं की प्रशंसा करना क्या मेरे लिए संभव है ? (नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ. पातकुलैन मीकृपकु पात्रुलु गारे ? दलंचि चूड ज
ड्रातिकि गल्गे बावन मरातिकि राज्यसुखंबु गल्गे दु-
र्जातिकि बुण्यमब्बे गपिजाति महत्वमुनोंदे गावुनन्
दातव येट्टिवारलकु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 52

सोच-विचार कर देखने पर पापी भी तुम्हारी कृपा के पात्र ही हैं। सोचने पर एक पत्थर को शाप-मोक्ष मिल गया। अराति (शत्रु - अर्थात् शत्रु के भाई) को राज्य सुख प्राप्त हुआ। नीच जाति वाले को (निषाद, शबरी आदि को) पुण्य प्राप्त हुआ। कपिजाति (बन्दरों के समूह) को महत्व प्राप्त हुआ। इसलिये कैसा भी पापी या नीच क्यों न हो, सब के लिए दाता तुम ही हो। हे भद्र .... निधी !

उ. मामक पातक व्रजमु मान्प नगण्यमु चित्रगुप्तुडे-
मेमनिव्रायुनो ? शमनुंडेमि विधिंचुनो ? कालकिंकर
स्तोममोनर्चुटेमो ? विनजोप्पडदिंतकु मुन्ने दीन चिं
तामणि ! येद्लु गाचेदवो ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 53

मेरे द्वारा किये गये पाप-समूह का निवारण नहीं किया जा सकता। वे अगणित हैं। पता नहीं, चित्रगुप्त अपने बही-खाते में क्या-क्या लिखेगा ? पता नहीं, शमन् (यमराज) क्या आदेश देंगे ? पता नहीं, यमदूतों का समूह किस रूप से दंडित करेगा ? इन सब से उत्तर सुनने के लिए सामर्थ्य मुझ में नहीं है। हे दीन चिंतामणी ! यमदूतों के हाथों फँसने से पहले ही, पता नहीं मेरी रक्षा कैसे करोगे ? हे भद्र .... निधी !

उ. दासिन चुट्टमा शबरि ? दानि दयामति नेलिनावु, नी
दासुनि दासुडा गुहुडु ? तावक दास्य मोसंगिनावु ने
जेसिन पापमा ? विनुति जेसिन गाववु, कावुमय्य, नी
दासुललोन नेनोकड दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 54

क्या शबरी तुम्हारी निकट की रिश्तेदार है जो दयामति से उसकी रक्षा की। क्या निषाद तुम्हारे दास का दास है जो उसे अपने यहाँ नौकरी दी है। मैं ने कौन-सा पाप किया है, जो तुम्हारा स्तोत्र करने पर भी रक्षा नहीं करते। मुझे बचाओ न, मालिक ! मैं तुम्हारे दासों में एक हूँ। हे भद्र .... निधी !

उ. दीक्ष वहिंचि नाकोलदि दीनुल नेंदरि गाचितो ? जग -
द्रक्षक ! तोह्ली या द्रुपदराज तनूज तलंचिनंतने
यक्षयमैन वल्वलिडितक्कट, ना मोर चित्तगिंचि प्र -
त्यक्षमु गावदेमिटिकि ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 55

दीक्षा-धारण कर हे जगद्रक्षका ! पूर्वकाल में मुझ जैसे कितने ही दीनजनों की रक्षा की थी। पूर्व में उस द्रुपदराज-तनूजा (द्रौपदी) के तुम्हारा स्मरण करते ही उसे अक्षय चीर प्रदान किये। हाय ! मेरी गुहार पर ध्यान देकर, साक्षात दर्शन क्यों नहीं देते हो ? रक्षा क्यों नहीं करते हो ? हे भद्र .... निधी !

उ. नीलघनाभमूर्तिवगु निन्नु गनुंगोन गोरि वेडिनन्
जालमु सेसि दागेदवु संस्तुति केक्किन राम नाम मे-
मूलन् दाचुकोगलवु मुक्ति कि ब्रापदि पापमूल-कु
द्दालमु गादे मायेडल दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 56

नील मेघ के वर्णवाले तुम्हें देखना चाहकर, निवेदन करने पर भी मुझे धोखा देकर छिपकर रह जाते हो। लेकिन जगत् में बहुप्रख्यात राम नाम को किस कोने में छिपाकर रख सकोगे ? वह (राम नाम) मुक्ति के लिए आधार है। पाप रूपी मूल को उखार देने वाला कुदाल है। हे भद्र .... निधी !

च. वलदु पराकु भक्त-जनवत्सल ! नी चरितंबु वम्मु का-
वलदु पराकु, नी बिरुदु वज्रमु वंटिदि कावकूरके
वलदु पराकु, ना दुरित वार्धिकि दे॒प्पवुगा मनंबुलो
दलंतु॒मे का निरंतरमु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 57

हे भक्तजन-वत्सल ! असावधानी मत बरतो। तुम्हारी कथा या चरित्र के महत्व को व्यर्थ नहीं होने देना है। असावधानी मत बरतो। तुम्हारा बिरुद वज्र-सम है। इसलिए मेरी रक्षा करने में असावधानी मत बरतो। मेरे पाप रूपी समुद्र को पार करने के लिए हम अपने मन में तुम्हें सदा नौका-सम समझते हैं। हे भद्र .... निधी !

उ. तप्पुले॒रुंगलेक दुरितंबुलु सेसितिनंटि, नीवु मा
यप्पबु गावुमंटि, निक नन्युलकुन् नुदुरंटनंटि, नी
को॒प्पिदमैन दासजनुलो॒प्पिन बंटुकु बंट नंटि ना
तत्पुलके॒ल्लु नीवे॒ गति दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 58

दोषों के बारे में न जानकर मैं ने कई पाप किये हैं। कहता हूँ कि तुम मेरे पिता हो। कहता हूँ कि तुम मेरी रक्षा करो। कहता हूँ कि अब आगे दूसरों के सामने सिर नहीं झुकाऊँगा। कहता हूँ कि तुम्हारे प्रिय दासों का दास बन गया हूँ। अब मेरे समस्त पापों को दूर करने का भार तुम्हारा है। तुम ही मेरे लिए शरण्य हो। हे भद्र .... निधी !

च.　इतडु दुरात्मुडंचु जनुलेन्नग नारडिगोंटि, नेने पो
पतितुड नंटिपो, परमापावनमूर्तिवि नीवु गल्ग ने
नितरुल वेडनंटि निहमिच्चिन निम्मु परंबोसंगुमी
यतुलित राम नाम मधुराक्षरपालि निरंतरंबु हृ-
द्गतमनि नम्मि कोल्चेदनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 59

यह पापात्मा है। ऐसा लोगों से निंदाएँ (आरोप) पानेवाला मैं ही हूँ। हे परमपावनमूर्ति ! कहता हूँ कि मैं सबसे अधिक पतित व्यक्ति हूँ। मैं कहता हूँ कि तुम्हारे रहते मैं दूसरों से याचना नहीं करूँगा। यदि दे सको तो इहलोक के सुख दो। लेकिन परलोक-सुख तो अवश्य दो। अतुलित राम-नाम-मधुराक्षर समूह को निरंतर हृदय में रखकर, विश्वास के साथ मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा। हे भद्र .... निधी !

उ.　अंचितमैन नीदु करुणामृतसारमु नादु पैनि ब्रो
क्षिंचिन जालु दान निरसिंचेद ना दुरितंबुलेल्ल दू-
लिंचेद वैरिवर्गमेडलिंचेद गोर्कुल नीदु बंटनै
दंचेद कालकिंकरुल दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 60

अपने समंचित करुणामृतसार को मुझ पर छिडक दो। वह मेरेलिए पर्याप्त है। उससे मैं अपने समस्त पापों को दूर कर लूँगा। छः प्रकार के अन्तः शत्रुओं को जीत लूँगा। दुष्ट कामनाओं का निर्दलन कर लूँगा। तुम्हारा दास बनकर यमदूतों को भगा दूँगा। हे भद्र .... निधी !

च. जलनिधुलेडु नोक्क मोगि जक्किकि देच्चे शरंबु, राति निं
पलरग जेसे नातिग बदाब्ज परागमु, नी चरित्रमुन्
जलजभवादि निर्जरुलु सन्नुति सेयगलेरु गावुनं
दलप नगण्यमय्य यदि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 61

एक ही बाण ने सातों जलनिधियों को एक स्थान पर ला खडा कर दिया। तुम्हारी चरण-धूल ने एक पत्थर को नारी बना दिया। तुम्हारे चरित्र के महत्व का जलजभव (ब्रह्मा) आदि निर्जर (देवता) भी स्तुति नहीं कर सकते। ऐसी तुम्हारी महिमा, सोचने पर अगणित है। (मुझ जैसा आदमी उसकी गिनती नहीं कर सकता।) हे भद्र .... निधी !

उ. कोतिकि शक्यमा यसुरकोटुल गेल्वनु ? गेल्चेबो निजं
बातनि मेन शीतकरुडौट दवानलुडेट्टिविंत ? मा
सीत पतिव्रतामहिम सेवकु भाग्यमु मी कटाक्षमुन्
धातकु शक्यमा पोगड ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 62

क्या एक बंदर के लिए राक्षस-समूह को जीतना संभव था ? खैर, जीता तो जीता। दावाग्नि का उसके शरीर पर चंद्र के समान शीतल बनना तो आश्चर्य की बात है। यह तो हमारी सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा है। तुम्हारी सेवा करनें वालों का सौभाग्य और तुम्हारे करुणा वीक्षणों की प्रशंसा करना धाता (ब्रह्मा) के लिए भी असाध्य है। हे भद्र .... निधी !

उ. भूपललाम ! राम ! रघुपुंगव ! राम ! त्रिलोकराज्य सं
स्थापन राम ! मोक्षफलदायक ! राम ! मदीय पापमुल्
पापगदय्य ! राम ! निनु ब्रस्तुति सेसेदनय्य राम ! सी
तापति ! राम ! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 63

हे भूप ललाम (राजाओं में श्रेष्ठ) ! राम ! रघुपुंगव राम! त्रिलोक राज्य संस्थापक राम ! मोक्ष-फलदायक राम ! मेरे पापों को दूर कर दो न। हे राम! तुम्हारी प्रस्तुति (प्रशंसा) करूँगा। हे भद्र .... निधी !

उ. नी सहजंबु सात्विकमु,नी विडिपट्टु सुधापयोधि प-
द्मासनुडात्मजुंडु, कमलालय नी प्रियुरालु,नीकु सिं-
हासन मिद्धरित्रि, गोडुगाकस मक्षुलु चंद्रभास्करुल्,
नी सुमतल्प मादिफणि, नीवे समस्तमु गोल्चिनट्टि नी
दासुल भाग्य मेट्टिदय दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 64

सात्विकता तुम्हारे लिए सहज है। तुम्हारा निवास-स्थान सुधा-पयोधि (क्षीरसागर) है। पद्मासन वाला(ब्रह्मा) तुम्हारा आत्मज (पुत्र) है। कमलालया (लक्ष्मी) तुम्हारी प्रिया है। यह धरती तुम्हारे लिए सिंहासन है। आकाश छत्र है। चन्द्र और भास्कर तुम्हारे नेत्र हैं। आदि फणि (शेषनाग) तुम्हारे लिए सुमतल्प (फूलों की सेज) है। इस जगत् का समस्त तुम ही हो। तुम्हारी सेवा करने वाले दासों का भाग्य वह कैसा है ? (अवर्णनीय महत्त्व का है)। हे भद्र .... निधी !

च. चरणमु सोकिनट्टिशिल जव्वनिरूपगुटोक्क विंत सु
स्थिरमुग नीटिपै गिरुलु देलिन दोक्कटि विंत गानि मी
स्मरण दनर्चु मानवुलु सद्गति जें दिन दें तविंत ! यी
धरनु ? धरात्मजारमण ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 65

चरण के स्पर्श से शिला का युवती-रूप धारण करना एक अद्भुत है। स्थिर रूप से जल पर पर्वतों का तैरना एक अद्भुत है। ये कार्य विचित्र तो हैं लेकिन आपके स्मरण-मात्र से शोभायमान होकर मानवों का सद्गति को प्राप्त करना कौन-सा बड़ा विचित्र-कार्य है ?। (वह तो साधारण सा विषय है) । हे धरात्मजा (सीता के)- रमण ! सचमुच इस धरा पर यह विचित्र कार्य नहीं है। हे भद्र .... निधी !

उ. दैवमु तल्लि दंड्रि तगुदात गुरुंडु सखुंडु निन्ने का
भावन सेयुचुन्न तरि बापमुलेल्ल मनोविकार दु-
र्भावितु जेयुचुन्नवि कृपामतिवै ननु गावुमी जग-
त्पावनमूर्ति! भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 66

तुम्हीं को देव, माता, पिता, समुचित दाता, गुरु, सखा के रूप में मान रहा हूँ। ऐसे अवसर पर, समस्त पाप मुझे मनोविकारों की दुर्भावनाओं से युक्त बना रहे हैं। हे जगत्पावन मूर्ति। कृपामति वाले बनकर मेरी रक्षा करो न ! हे भद्र .... निधी !

उ. वासवराज्य भोगसुख वार्धिनि देलु प्रभुत्वमब्बिनन्
आसकु मेर लेदु, कनकाद्रि समान धनंबु गूर्चिनं
गासुनु वें̱टरादु, कनि कानक चेसिन पुण्य पापमुल
वीसर बोव नीवु पदिवेलकु जालु भवंबु नो̱ल्लु नी
दासुनिगाग नेलिको̱नु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 67

वासव (इन्द्र) के राज्यभोगों के सुख- समुद्र में ऊभ-चूभ कराने वाली प्रभुता के प्राप्त होने पर भी, आशा (लोभ) के लिए कोई सीमा नहीं है। कनकाद्रि (मेरुपर्वत) के समान धन को एकत्र करने पर भी, एक पैसा भी साथ नहीं आता। लेकिन जानकर या अनजाने में किए पाप और पुण्य तो कम-ज्यादा न होकर साथ रहते हैं। दस हजार (बहुत अधिक) धन भी मुझे नहीं चाहिए। इस संसार को नहीं चाहता। अपना दास बनाकर मेरी रक्षा करो। हे भद्र .... निधी !

उ. सूरिजनुल्,दयापरुलु,सूनृतवादु ललुब्धमानवुल्,
वीर पतिव्रतांगनलु, विप्रुलु, गोवुलु, वेदमुल्, मही-
भारमु दाल्पगा, जनुलु पावनमैन परोपकार स-
त्कार मे̱रुंग लेरकट दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 68

सूरिजन (पंडित), दयालु, सत्यवादी, अलुब्ध- (जिनमें लोभ की भावना नहीं है) मानव, वीर (सुदृढ) पातिव्रत्यवाली नारियाँ, विप्र, गो, वेद, ये भूभार को वहन करते हैं। इस अवसर पर भी लोग हाय, पवित्र परोपकार के सत्कर्म (के महत्व) को नहीं जानते। हे भद्र .... निधी !

उ. वारिचरावतारमुन वारिधिलो जोरबारि क्रोधवि-
स्तारगुडैन या निगम तस्कर वीर निशाचरेंद्रुनिं
जेरि वधिंचि वेदमुल चिक्केडलिंचि विरिंचिकिन् महो-
दारत निच्चितीवे कद, दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 69

वारिचर (जलचर-मत्स्य) के अवतार में वारिधि में पैठकर, क्रोध के विस्तार से युक्त (अधिक क्रोधी) और आगम- तस्कर (वेदों को चुराने वाले) वीर - निशाचरेन्द्र के निकट जाकर, उसका वध कर, वेदों को उलझन से बचाकर, विरिंचि (ब्रह्मा) को महा - उदार - भाव से देने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. करमनुरक्ति मंदरमु गव्वमुगा, नहिराजु द्राडुगा
दोरकोनि देवदानवुलु दुग्धपयोधि मथिंचुचुन्नचो
धरणि चलिंप लोंकमुल् तल्लडमंदग गूर्ममै धरा-
धरमु धरिंचि तीवे कद दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 70

अधिक अनुरक्ति से मंदर-पर्वत को मथानी बनाकर, अहिराज को रस्सी बनाकर, देव-दानवों के दुग्ध-पयोधि (क्षीर-सागर) को मथते समय धरणी के विचलित होकर, समस्त लोकों के व्याकुल बन जाने पर, कूर्म बनकर, धराधर (पर्वत) को धारण करने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

उ. धारुणि जाप जुट्टिन विधंबुन गैकोनि हेमनेत्रुंड
व्वारिधि लोन डागिननु वानि वधिंचि वराहमूर्तिवै
धारुणि दोंटि कैवडिनि दक्षिण श्रृंगमुन धरिंचि वि-
स्तार मोनिर्चितीवे कद दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 71

धरणी को चटाई के समान लपेट, उसे लेकर, हेमनेत्र (हिरण्याक्ष) के वारिधि में छिपने पर भी, उसका वध करके, वाराहमूर्ति के रूप में धारुणी की रक्षाकर, यथापूर्व उसे दक्षिण श्रृंग पर धारण कर, उसे परिव्याप्त करने वाले (चटाई सम बनी धरती को फैलाने वाले) तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. पेटपेट नुक्कु गंबमुन भीकर दंतनखांकुर प्रभा-
पटलमु गप्प नुप्पतिलि भंडनवीथि नृसिंह भीकर-
स्फुट पटुशक्ति हेमकशिपुन् विदलिंचि सुरारि पट्टि नु-
त्कट गृप जूचितीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 72

फट-फट लौह-स्तंभ से भीकर-दंत - नखांकुर के प्रभा-पटल (समूह) के व्याप्त होने पर, उद्‌भूत होकर, रणरंग में, भयंकर स्पष्ट-दृढ-बल से हेम कशिप (हिरण्यकशिप) का निर्दलन कर, उसके बाद सुरारि (राक्षस) के पुत्र (प्रहलाद) को तब कृपावीक्षणों से देखने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. पदयुगलंबु भूगगन भागमुलन् वेस नूनि विक्रमा-
स्पदमगु नब्बलींद्रु नोक पादमुनं दलक्रिंद नोत्ति मे-
लोदव जगत्त्रयंबु बुरुहूतुन किय्य वटुंडवैन चि-
त्सदमलमूर्ति नीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 73

पदयुगल से शीघ्रता से भूमि-आकाश को दबाकर, विक्रम के आस्पद (स्थान) उस बलीन्द्र को एक चरण से, नीचे की ओर दबाकर, शोभा से जगत्त्रय को पुरुहूत (इन्द्र) को देने के लिए वटु बने चित्सदमल मूर्ति वाले तुम्हीं हो न! हे भद्र .... निधी !

च. इरुवदि योक्क मारु धरणीशुल नेल्ल वधिंचि तत्कले-
बर रुधिर प्रवाहमुन बैतृक तर्पणमोप्प जेसि भू-
सुर-वरकोटिकिन् मुदमु सोप्पड भार्गवमूर्तिवै
धरणि नोसिंगतीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 74

इक्कीस बार समस्त धरणीशों (राजाओं) का वध करके, उनके कलेबरों से निकले रुधिर-प्रवाह से पैतृक-तर्पण को शोभा से करके, भूसुर-कोटि (ब्राह्मण-समूह) को प्रसन्न बनाने के लिए, भार्गवमूर्ति (परशुराम) बन, उन्हें भूमि प्रदान करने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. दुरमुन दाटकं दुनिमि धूर्जटि विल् दुनुमाडि सीतनुं
बरिणयमंदि, तंड्रि पनुपन् घन कानन भूमि केगि दु-
स्तर पटुचंडकांड कुलिशाहति रावण कुंभकर्ण भू-
धरमुल गूल्चितीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 75

युद्ध में ताडगा का संहार करके धूर्जटि (शिवजी) के धनुष को तोडकर, सीताजी से विवाह करके, पिता के भेजने पर घन-कानन भूमियों में जाकर, दुस्तर-पटु-चंड-कांड (दुस्तर-दृढ-तीक्ष्ण-बाण) रूपी कुलिश (वज्र) के आघातों से रावण-कुंभकर्ण (आदि) भूधरों (पर्वतों) को गिरा देने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. अनुपम यादवान्वय सुधाब्धि सुधानिधि कृष्णमूर्ति नी
कनुजुडुगा जनिंचि कुजनावलि नेल्लु नणंचि रोहिणी-
तनयुडनंग बाहुबल दर्पमुनन् बलराममूर्तिवै
तनरिन वेल्पु वीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 76

अनुपम यादव-अन्वय (वंश) रूपी सुधाब्धि (क्षीरसागर) के सुधानिधि (चंद्र) सम श्रीकृष्ण ने, तुम्हारे अनुज के रूप में जन्म लेकर, समस्त दुष्ट समूहों का नाश किया। तुम, रोहिणी-तनय कहलाकर, बाहुबलदर्प से बलराम बनकर शोभायमान बने देव तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

च. सुरलु नुतिंपग द्रिपुरसुंदरुलन् वरियिंप बुद्धरू-
परयग दाल्चितीवु त्रिपुरासुरकोटि दहिंचुनप्पुडा-
हरुनकु दोड्डुगा वरशरासन बाणमुखोग्र साधनो-
त्कर मोनरिंचितीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 77

देवताओं के प्रशंसा करने पर, त्रिपुर सुंदरियों का वरण कर, सोच-विचार करने पर, बुद्ध रूप को तुम ने धारण किया। त्रिपुरों के असुर-समूहों को जलाते समय, उस शिवाजी का साथ देकर, वर (श्रेष्ठ) शरासन (धनुष)-बाण आदि उग्र-साधन-समूह को एकत्र कर देने वाले तुम्हीं हो न ! हे भद्र .... निधी !

उ. संकर दुर्गमै दुरितसंकुलमैन जगंबु जूचि स-
र्वंकषलील नुत्तम दुरंगमु नेक्कि करासि बूनि वी-
रांक विलास मोप्प गलिकाकृति सज्जनकोटिकिन् निरा-
तंक मोनर्चितीवे कद ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 78

वर्ण संकर से दुर्गम बन, पापों में लिप्त बने जगत् को देखकर, अत्यन्त उत्साह से, श्रेष्ठ अश्व पर सवार होकर, हाथ में करवाल को धारण कर, शूरों की शोभा से विलसित होकर, कल्कि रूप से, सज्जन-समूह के जीवन को निर्बाध तुम्हीं बनाओगे न ! हे भद्र .... निधी !

च. मनमुन नूहपोहणलु मर्वकमुन्ने, कफादिरोगमुल्
दनुवननंटि मेनिबिगि दप्पकमुन्ने, नरुंडु मोक्ष सा-
धन मोनरिंपगावलयु, दत्त्व विचारमु मानियुंडुट
ल्तनुवुनकुन् विरोधमदि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 79

मन में ऊहापोह (सोचविचार) की शक्ति के समाप्त न होने से पहले ही, कफ आदि रोगों के शरीर से लगकर, शरीर के ढीले पड़ जाने से पहले ही, मानव को मोक्ष साधने का प्रयत्न करना चाहिए। तत्व- विचार से अलिप्त रहना, इस शरीर के विरोध में ही है। हे भद्र .... निधी !

च. मुदमुन काटपट्टु, भवमोहमद द्विरदांकुशंबु, सं-
पदलकोटारु, कोरिकल पंट, परंबुनकादि वैरुल-
न्नदन जयिंचु त्रोव, विपदब्धिकि नावगदा सदा भव-
त्सदमलनाम संस्मरण दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 80

सदा भवत्सदमल नाम स्मरण (करना) मोद का निलय है, भवमोहरूपी द्विरद (गज) के लिए अंकुश है, संपदाओं का भंडार है, मनोरथ का फल है, मोक्ष का मूल है, समय पर वैरियों को जीतने का मार्ग है, विपद रूपी समुद्र को पार करने के लिए नौका है न ! हे भद्र .... निधी !

च. दुरितलतानुसारि भवदुःख कदंबमु रामनाम भी-
करतर हेतिचे <u>दे</u>गि वक्कावकलै चनकुंडनेर्चुने-
दरि<u>को</u>नि मंडुचुंडु शिखि दा<u>र्को</u>निनन् शलभादि कीटको-
त्करमु विलीनमै चन<u>दे</u> ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 81

पापरूपी लताओं के साथ आने वाले सांसारिक दुःख समूह रामनाम रूपी भीकर करवाल से कटकर, टुकड़े-टुकड़े हो बिखर न जाएगा ? (अवश्य बिखर जाएगा) लगकर बलने वाली शिखि (अग्नि) के निकट जाने पर, शलभ आदि कीटक-समूह (जलकर) अवश्य विलीन नहीं होगा ? (अवश्य नष्ट हो जाएगा)। हे भद्र .... निधी !

....

च. हरिपद-भक्ति निंद्रिय जयान्वितुडुत्तमुडिंद्रियंबुल
न्मरुगक निल्प नूदिननु मध्यमुडिंद्रिय पारवश्युडै
परगिनचो निकृष्टुडनि पल्कग दुर्मतिनैन नन्नु ना-
दरमुन <u>ने</u>द्लु का<u>चे</u>द<u>वो</u>? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 82

हरिपद-भक्ति के कारण इंद्रियों को जीतने वाला उत्तम है। इंद्रियों के वश न होकर संयम से रहने का प्रयास करने वाला मध्यम है। इंद्रियों के वश होकर, आचरण करने वाला निकृष्ट (अधम) है। ऐसा (बड़ों के) कहने पर मुझ दुर्मति की सादर रक्षा कैसे करोगे ? (अवश्य रक्षा करोगे)। हे भद्र .... निधी !

च. वनकरि चिक्के मैनसकु, वाचविकिं जेडिपोये मीनु, ता
विनिकिकि जिक्के जिल्व, कनुवेदुरु जेंदेनु लेळ्ळु, ताविलो
मनिकि नशिंचे देटि, तरमा यिरुमूटिनि गेल्व नैदु सा-
धनमुल नीवे कावदगु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 83

वनकरि (जंगल का हाथी) हथिनी पर मोह के कारण फँस गया। जीभ की आसक्ति के कारण मछली नष्ट हो गई। सर्प सुस्वर के मोह में पडकर, बंधनों में फँस गया। हरिण आँखों की सुन्दरता के कारण फँस गया। भ्रमर सुगंध के प्रलोभन के कारण नष्ट हो गया। पाँच इंद्रियों को जीतना किसके बस की बात है ? (नहीं है) फिर भी तुम किसी प्रकार से पाँच साधनों से मेरी रक्षा करो। हे भद्र .... निधी !

च. करमुलु मीकु म्रोक्कुलिड गन्नुलु मिम्मुने जूड, जिह्व मी
स्मरण दलिर्प, वीनुलु भवत्कथलन् विनुचुंड, नास मी-
यरुतन् बेट्टुपूसरुल कासकोनं बरमार्थ साधनो-
त्करमिदि चेयवे कृपनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 84

हाथ तुम्हें प्रणाम कर रहे हैं। नेत्र तुम्हीं को देख रहे हैं। जिह्वा तुम्हारा ही स्मरण कर रही है और शोभायमान हो रही है। कर्ण तुम्हारी कथाओं को सुन रहे हैं। नाक तुम्हारे कंधे पर रखी पुष्प-मालाओं की सुगंध की आशा (कामना) कर रही है। यह परमार्थ (मोक्ष) के साधन का समूह है। मन में कृपाभाव रख, ये साधन मुझे प्राप्त करा दो। हे भद्र .... निधी !

च. चिरतर भक्ति नोक्क तुलसीदलमर्पणसेयुवाडु खे-
चर गरुडोरग प्रमुख संघमुलो वेलुगुन् सदा भव-
त्स्फुरदरविंद पादमुल बूजलोनर्चिन वारि केल्लु द-
त्परमरचेति धात्रिगद दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 85

चिरतर (शाश्वत) भक्ति से (तुम्हारे चरणों में) एक तुलसीदल भी समर्पित करने वाला खेचर, गरुड, उरग (सर्प) आदि क्यों न हों देवताओं के समूह में विलसित होगा। सदा तुम्हारे विकसित चरण- कमलों की पूजा करने वालों के लिए परमपद (मोक्ष) करतल की धरती बनेगी न। हे भद्र .... निधी !

उ. भानुडु तूर्पुनंदु गनुपट्टिन बावकचंद्र तेजमुल्
हीनत जेंदिनट्लु जगदेक विराजितमैन नी पद-
ध्यानमु सेयुचुन्न बरदैवमरीचुलडंगकुंडुने
दानवगर्वनिर्दलन ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 86

सूर्य के पूर्व-दिशा में दिखायी पडते ही, पावक (अग्नि) और चंद्र के तेज के हीन (मलिन) बन जाने के समान, जगदेक-विराज (जगत में एकैक होकर विलसित) तुम्हारे चरणों का ध्यान करते रहने पर, अन्य देवताओं की मरीचियाँ (कांतियाँ) प्रच्छन्न होकर नहीं रह जायेंगी ? अवश्य अन्य देवताओं की कांतियाँ मलिन हो जायेंगी। हे भद्र .... निधी !

उ. ने महनीय तत्वरस निर्णय बोधकथमृताब्धिलो
दानुनु ग्रुंकुलाडक वृथा तनु कष्टमु जें दि मानवुं-
डी महिलोकतीर्थमुल नेल्ल मुनिंगिन दुर्विकार हृ-
त्तामसपंकमुल् विडुने दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 87

तुम्हारे महनीय तत्व-रस के निर्णय का बोध करने वाली कथाओं के अमृतसागर में निमग्न न होकर मनुष्य व्यर्थ ही शरीर को कष्ट देकर इस जगत के समस्त तीर्थों में डुबकियाँ लगाने पर क्या दुर्विकारों से युक्त हृदय का तामस (अज्ञान) रूपी पंक दूर होगा ? (नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ. कांचन वस्तु संकलित कल्मष मग्निपुटंबु वेट्टि वा-
रिंचिनरीति नात्म निगिडिंचिन दुष्कर दुर्मलत्रयं-
बंचित भक्तियोग दहनार्चि दगुल्पक पायुने कन-
त्कांचन कुंडलाभरण ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 88

कांचन वस्तु (सोने के आभरणों) में, संकलित (जमा हुए) कल्मष (मैल) को दूर करने के लिए उसे अग्नि में जला लेने के समान आत्मा (हृदय) में एकत्रित दुष्कर-दुर्मल त्रय (मन, वाक् और शरीर के पाप) को समंचित भक्ति-योग रूपी अग्नि-शिखाओं में भस्म किये बिना क्या वे पाप दूर हो जायेंगे ? (नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ.	नी सति पे̱क्कु कल्मुलिड नेर्परि, लोकमकल्मषंबुगा
नी सुत जेयु बावनमु, निर्मि तकार्यधुरीण दक्षुडै
नी सुतुडिच्चु नायुवुलु, निन्नु भजिंचिन गल्गकुंड्डुने
दासुल कीप्सितार्थमुलु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 89

तुम्हारी सती (लक्ष्मी) अनेक प्रकार की संपदाओं को देने में कुशल है। तुम्हारी सुता (गंगा) लोक को अकल्मष (निर्दोष) और पावन बनाती है। तुम्हारा पुत्र (ब्रह्मा) नियमित कार्य करने में दक्ष (समर्थ) होकर आयु प्रदान करता है। ऐसे तुम्हारी सेवा करने पर भक्तों की मन चाही कामनाएँ पूर्ण नहीं होंगी क्या ? (अवश्य कामनाओं की पूर्ति होगी।) हे भद्र .... निधी !

उ.	वारिजपत्रमंदिडिन वारि विधंबुन वर्तनीयमं-
दारय रो̱ंपिलोन दनुवंटनि कुम्मरिपुर्वरीति सं-
सारमुनन् मे̱लंगुचु विचारगुडै परमो̱ंदु गादे̱ स-
त्कारमे̱रिंगि मानवुड्डु दाशरथी ! करुणापायोनिधी ! 90

कमल पत्र पर जलबिंदु के समान, सोचने पर मार्ग-मध्य की कीचड में लिप्त न होनेवाली झींगुर के समान इस भवसागर में रहते हुए भी यदि मानव ब्रह्मतत्व का विचार करते हुए सत्कार (भगवत्-सेवा) को जानकर करता रहेगा, तो मोक्ष को प्राप्त करेगा। हे भद्र .... निधी !

उ. एक्कडि तल्लिदंड्रि सुतुलेक्कडिवारु कलत्रबांधवं-
बेक्कड जीवुडेट्टितनुवेत्तिन बुट्टुचु बोवुचुन्नवा-
डोक्कडे पापपुण्यफलमोंदिन नोक्कडे कानराडु वे-
रोक्कडु वेंटनंटि भवमोल्लनया कृपजूडवय्य नी
तक्करि मायलंदिडक दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 91

कहाँ के माता-पिता ? कहाँ की सन्तान? कहाँ के कलत्र और कहाँ के बन्धु जन? जीव जो कोई भी तनु (शरीर) धारण करे, वह अकेला ही पैदा होता और मरता रहता है। अकेले ही पाप और पुण्य के फल को प्राप्त करता है। साथ देने वाला कोई दूसरा दिखायी नहीं पडता। साथ आने वाले इस जन्म-मरण को मैं नहीं चाहता। अपनी कपट-मायाओं में मुझे न फँसाकर कृपा दृष्टि से देखो। हे भद्र .... निधी !

च. दोरसिन कायमुल् मुदिमि तोचिन जूचि प्रभुत्वमुल्सिरु
ल्मेरुपुलुगाग जूचि मरि मेदिनिलो दमतोडिवारु मुं -
दरुगुट जूचि चूचि तेगु नायुवेरुंगक मोहपाशमु
ल्दरुगनि वारि केमि गति ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 92

प्राप्त शरीरों में बुढापे के आने पर भी प्रभुता और संपदाओं को बिजली की रेखाओं के समान अशाश्वत दिखायी पडने पर भी, अपने साथ आनेवालों के पहले ही निकल जाते (मरते) देखकर भी, दिन-ब-दिन कमहोते जानेवाली आयु के बारे में न जानकर, मोहपाशों से विमुक्त न होनेवालों की कैसी गति (दुर्दशा) होगी ? हे भद्र .... निधी !

च. सिरिगलनाडु मैमरचि चिक्किननाडु तलंचि पुण्यमुल्
पोरिबोरि जेयनैतिननि पोक्किन गल्गुने ? गालि चिच्चुपै
गेरलिन वेळ दप्पिगोनि कीड्पडु वेळ जलंबु गोरि त
त्तरमुन द्रव्विनंगलदे ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 93

जब संपत्ति है, उस समय मद से अपने आप को भूलकर अनेक पाप कर, घर में और शरीर में शक्ति के क्षीण हो जाने पर बारंबार यह सोचना व्यर्थ है कि मैं ने पुण्य कार्य नहीं किये थे। इस प्रकार सोचकर व्यथित होने से क्या लाभ? वायु के अग्नि को भडकाने पर, प्यासा बनकर व्यथित होते समय, जल की इच्छा से जल्दबाजी से कुआँ खोदने के प्रयत्न से क्या कोई लाभ होगा ? (नहीं)। हे भद्र .... निधी !

उ. जीवनमिंक बंकमुन जिक्किन मीनु चलिंपकेंतयुं
दावुन निल्चि जीवनमे तद्दयु गोरुविधंबु चोप्पडं
दावलमैन गानि गुरि दप्पनिवाडु तरिंचुवाडया
तावकभक्ति योगमुन दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 94

तालाब के जल के सूख जाने पर कीचड में फँसा मीन (मछली) वहीं रहकर जल की इच्छा करते रहने के समान, अपने स्थान और लक्ष्य से न हटकर तुम्हारे भक्ति-योग में निमग्न रहनेवाला अवश्य ही (संसार सागर को) पार कर सकता है। हे भद्र .... निधी !

च. सरसुनि मानसंबु सुरसज्ञु डेरुंगुनु मुष्कराधमुं
डेरिंगि ग्रहिंचुवाडे कोलनेकनिवासमु गाग दर्दुरं-
बरयग नेर्चुनेट्टुलु विकचाब्जमरंदरसैक सौरभो-
त्करमु मिलिंद मोंदु क्रिय दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 95

सरस व्यक्ति के मन को सुरसज्ञ जान सकता है। मुष्कराधम (दुष्ट और अधम) कहाँ जान सकता है ? (नहीं जान सकता) सरोवर में ही निरंतर रहनेवाला मेंढक सरोवर में विकसित कमल के मकरंद की सुगंध को जान नहीं सकता। लेकिन दूर पर रहकर भी भ्रमर उसको जानकर प्राप्त करता है। हे भद्र .... निधी !

उ. नोचिन तल्लिदंड्रिकि दनूभवुडोक्कडे चालु मेटि चे-
चाचनिवाडु वेरोकडु चाचिन लेदनकिच्चुवाडु नो
राचि निजंबु कानि पलुकाडनिवाडु रणंबुलोन मेन्
दाचनिवाडु भद्रगिरि दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 96

अच्छे व्रत करने वाले पुण्यात्मा माता-पिता को ऐसा एक पुत्र पर्याप्त है जो किसी के सामने हाथ नहीं पसारता, हाथ पसाकर माँगनेवाले को 'नहीं' न कहकर देता है, कभी अनौचित्य और अनृत नहीं बोलता, युद्ध में अपने शरीर की रक्षा नहीं करता, ऐसा श्रेष्ठ पुत्र एक ही पर्याप्त है। हे भद्र ....निधी!

उ. 'श्रीयुत ! जानकीरमण ! चिन्मयरूप ! रमेश ! राम ! ना-
रायण ! पाहिपाहि' यनि प्रस्तुति जेसिति नामनंबुनं
बायक किल्बिष व्रजनिपाटनमंदग जेसि सत्कला
दायि फलंबु ना कीयवे दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 97

'हे श्रीयुत ! जानकी रमण ! चिन्मय रूप वाले ! रमेश! राम ! नारायण !पाहि पाहि' ऐसा कहकर मैं ने तुम्हारी प्रस्तुति (प्रशंसा) की है। मेरे मन को न छोडकर पापपुंज का विपाटन (निर्मूलन) कर सत्कलादायी फल (मोक्ष) मुझे प्रदान करो न। हे भद्र .... निधी !

उ. एंतटि पुण्यमो शबरि येंगिलि गोंटिवि विंत गादे ? नी
मंतनमेट्टिदो युड्ुतमेनि कराग्र नखाकुरंबुलन्
संतसमंद जेसितिवि सत्कुल जन्ममुलेमि लेक्क वे
दांतमु कादे नी महिम ! दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 98

कितना पुण्य किया होगा, उस शबरी ने जो उसकी जूठन खायी। यह अद्‌भुत कार्य नहीं है क्या ? पता नहीं, तुम्हारी मानसिक प्रवृत्ति कैसी है जो गिलहरी के शरीर पर अपनी उँगलियों से रेखाएँ बनाकर उसे प्रसन्न किया। सत्कुल (ऊँची जाति) में पैदा होना तुम्हारे लिए कौन सी बडी बात है ? तुम्हारी महिमा के बारे में सभी उपनिषदों में वर्णित ही है। हे भद्र .... निधी !

उ. बोंकनिवाडे योग्युडरिबृंदमु लेत्तिनचोट जिव्वकुन्
जंकनिवाडे जोदु रभसंबुन नर्थिकरंबु साचिनं
गोंकनिवाडे दात मिमु गोल्चि भजिंचिन वाडे पो निरा-
तंक मनस्कुडेन्नगनु, दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 99

झूठ न बोलने वाला ही योग्य है। शत्रुओं के आक्रमण करने पर युद्ध करने के लिए भीत न होनेवाला ही योद्धा है। आतुरता से याचक के हाथ फैलाने पर बिना संशय के देनेवाला ही दाता है। इसी प्रकार आपकी सेवा कर पूजा करने वाला ही निरांतक मन वाला मानव है। हे भद्र .... निधी !

च. भ्रमरमु कीटकंबु गोनि पाल्पडि झांकरणोपकारियै
भ्रमरमुगा नोनर्चुननि पल्कुट जेसि भवादि दुःखसं-
तमसमेडल्चि भक्ति सहितंबुग जीवुनि विश्वरूपत-
त्वमुनु धरिंचुटेमरुदु ? दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 100

कहते हैं कि भ्रमर कीटक को लाकर सप्रयत्न झंकार करते हुए उस कीटक को भ्रमर बना देता है। ऐसी हालत में जीव का जन्म के प्रारंभ से दुःख रूपी अंधकार से मुक्त कर भक्ति से युक्त होकर विश्वरूप तत्व को धारण करने में आश्चर्य की क्या बात है ? (निरंतर नाम स्मरण से तादात्म्य की प्राप्ति संभव है।) हे भद्र .... निधी !

च. तरुवुलु पूचि कायलगु दत्कुसमंबुलु पूजगा भव-
च्चरणमु सोकि दासुलकु सारमुलै धनधान्यरासुलै
करिभट घोटकांबर निकायमुलै विरजानदी समु-
त्तरणमोनर्चु जित्रमिदि, दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 101

पेड फूलते हैं वे फूल वैसे ही रहें तो फल बन जाते हैं। लेकिन उन फूलों को पूजा के लिए लाकर तुम्हारे चरणों में रखने से वे धन-धान्यों की राशियाँ बनकर करि (हाथी), भट (दास), घोटक (घोडा), अंबर (वस्त्र) बनकर; अंत में विरजा नदी के समुत्तरण (पार करने में) सहायक होते हैं। यह आश्चर्य की बात है न! हे भद्र .... निधी !

उ. पट्टिति भट्टरार्यगुरुपादमुलिम्मेयि नूर्ध्व पुंड्रमु-
बेट्टिति मंत्रराज मोडि वेट्टिति नय्यमकिंकरालिकिं
गट्टिति बोम्म मी चरणकंजमुलंदु दलंपुवेट्टि पो
दट्टिति बापपुंजमुल दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 102

भट्टरार्य नामक गुरु के चरणों को पकडा है। इस आनन पर ऊर्ध्व रखाओं (तिलक) को धारण किया है। मंत्रराज (अष्टाक्षरी महामंत्र) का संग्रहण किया है। उन यमदूतों का अपमान किया है। आपके चरण-कमलों को ध्यान में रखकर, पाप-पुंजों को लात मार उडा दिया। हे भद्र .... निधी !

च. अल्लन लिंगमंत्रि सुतुडत्रिजगोत्रजु डादिशाख कं-
चर्लकुलोद्भवुंडन ब्रसिद्धुडनै भवदंकिंतंबुगा
ने॒ल्लकवुल् नुतिंप रचियिंचिति गोपकवींद्रुडन् जग
द्वल्लभ ! नीकु दासुडनु दाशरथी ! करुणापयोनिधी ! 103

हे जगत के वल्लभ ! मैं लिंगन मंत्री का पुत्र हूँ। अत्रिज गोत्र में पैदा हुआ हूँ। आदि शाखा से संबद्ध कंचेर्ल वंश में पैदा हुआ हूँ। इस प्रकार लोक में प्रसिद्ध होकर समस्त कवियों के प्रशंसा करने पर, गोप कवींद्र नामक मैं ने तुम्हारे नाम पर इस शतक की रचना की। मैं तुम्हारा दास हूँ। हे भद्र .... निधी !

दाशरथी शतकम् संपूर्णम्

प्रो. भीमसेन निर्मल

पूरा नाम	: भंडारम् भीमसेन जोस्युलु
जन्म स्थान, तिथि	: मेदक (आं.प्र), 30-11-1930
शैक्षिक योग्यताएँ	: एम.ए.पीएच.डी(हिन्दी), एम.ए. (तेलुगु)
शैक्षिक अनुभव	: हिन्दी अध्यापन में 50 वर्ष, अध्यक्ष एवं आचार्य (अवकाश प्राप्त), हिन्दीविभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद। कई संस्थाओं के प्रशासनिक कार्यों से संबद्ध
उपाधियाँ :	सरस्वतीपुत्र (नजीबाबाद), साहित्याचार्य (हैदाराबाद) साहित्य वाचस्पति (इलाहाबाद), सम्मान्य आचार्य (यू.जी.जी)
लेखन :	1000 से अधिक अनुवाद, 600 से अधिक लेख प्रकाशित 12 मौलिक तथा 69 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित
शोधकार्य :	24 छात्रों को पीएच.डी, 6 छात्रों को एम.फिल उपाधि
पुरस्कार :	कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत
अभिरुचि :	अनुवाद, तुलनात्मक अध्ययन, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण
पता :	408, गांधीनगर, हैदराबाद - 500 080. फोन : (040) 7613429.